महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट [redacted]तना (म.प्र.)

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग

एम.ए. समाजशास्त्र

अध्ययन मण्डल कार्यवृत्त

कला संकाय के अंतर्गत मानविकी एंव सामाजिक विज्ञान विभाग द्वारा संचालित किए जाने वाले एम.ए. समाजशास्त्र पाठ्यक्रम के अध्ययन मण्डल की बैठक दिनांक 30-07-2022 को अधिष्ठाता कक्ष में सम्पन्न ~~सम्पन्न~~ हुई। जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहे :-

- डॉ. एन. एल. मिश्रा अधिष्ठाता कला संकाय– अध्यक्ष।
- डॉ. विनोद मिश्रा जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय चित्रकूट (म.प्र.) बाह्य विशेषज्ञ
- डॉ. नीरज चौरे – सदस्य
- डॉ. अजय आर. चौरे -- सदस्य
- डॉ. त्रिभुवन सिंह वरिष्ठ प्रवक्ता, इतिहास--- सदस्य
- डॉ. विनोद शंकर सिंह, समाज कार्य– ~~प्राध्यापक~~– सदस्य
- डॉ राजेश त्रिपाठी – सदस्य

अध्ययन मण्डल की बैठक में संचालित एम.ए. समाजशास्त्र, पाठ्यक्रम पर विस्तृत विचारविमर्श के उपरान्त निम्नानुसार निर्णय लिया गए।

(1) पाठ्यक्रम सेमेस्टर एवं क्रेडिट प्रणाली के अधार पर तैयार किया गया है इसे सेमेस्टर एवं क्रेड़िट प्रणाली के आधार पर चलाने की अनुशंसा की जाती है।

(2) पाठ्यक्रम की अवधि चार सेमेस्टर की होगी।

(3) पाठ्यक्रम मे कुल 16 प्रश्न पत्र तथा प्रत्येक प्रश्न पत्र 4 क्रेडिट के होगे एवं अंतिम सेमेस्टर में एक प्रश्न पत्र के रूप में बाह्य विशेषज्ञ द्वारा मौखिक परीक्षा सम्पन्न की जावेगी जिसकी क्रेडिट 06 होगी।

(4) विश्वविद्यालय स्तर पर मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्व अनिवार्य पाठ्यक्रम हैयह इस पाठ्यक्रम में भी लागू होगा और स्नातकोत्तर स्तर पर जो क्रेडिट एवं परीक्षा प्रणाली निर्धारित है वह इस पाठ्यक्रम में लागू होगी।

(5) प्रस्तुत पाठ्यक्रम, अंक विभाजन एवं क्रेडिट को अनुमोदित किया गया।

महात्मा गॉधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट सतना (म.प्र.)

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग

एम.ए. समाजशास्त्र

नियमावली

(1) पाठ्यक्रम का नाम – एम.ए. समाजशास्त्र

(2) छात्र संख्या– विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित

(3) पाठ्यक्रम की अवधि – 04 सेमेस्टर।

(4) पाठ्यक्रम में प्रवेश अर्हता– स्नातक।

(5) आयु सीमा– विश्वविद्यालय के नियमानुसार

(6) प्रवेश – विश्वविद्यालय के प्रवेश नियमावली के अनुसार

(7) शिक्षण प्रणाली– क्रेडिट पद्धति आधारित सेमेस्टर प्रणाली

(8) परीक्षा एवं मूल्यांकन – प्रत्येक प्रश्न पत्र कुल 100 अंक (20 आंतरिक मूल्यांकन + 80 बाह्य परीक्षा) एवं अंतिम सेमेस्टर में पांचवे प्रश्न पत्र के रूप में ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण एवं रिर्पोट के आधार पर 100 अंक की बाह्य विशेषज्ञ द्वारा मौखिक परीक्षा सम्पादित की जावेगी।

(9) शुल्क– विश्वविद्यालय कक नियमानुसार।

(10) विश्वविद्यालय द्वारा समय–समय पर परिवर्तित नियम उक्त पाठ्यक्रम मे लागू होगी।

(11) मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्व पाठ्यक्रम एवं क्रेडिट जो विश्वविद्यालय द्वारा निर्धरित किया जायेगा वही इस पाठ्यक्रम पर भी उपर्युत क्रेडिट के अतिरिक्त लागू होगा।

(12) मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग के अंतर्गत नियमित कोर्स के रूप में संचालित एम.ए. समाजशास्त्र का उपर्युक्त पाठ्यक्रम दूरवर्ती अध्ययन केन्द्र के द्वारा संचालित होने वाले कोर्स एम.ए. समाजशास्त्र में यथावत् लागू करने हेतु प्रस्तावित है।

(13) नियमित अध्ययन केन्द्र में संचालित कोर्स एम.ए. समाजशास्त्र के नामकरण पर विद्यापरिषद् की बैठक में संशोधित करने अथवा यथावत् रखने का विचार किया जाये।

Scanned with OKEN Scanner

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट सतना (म.प्र.)

एम. ए. (समाज षास्त्र) पाठ्यकम

सत्र : 2020–2021

U.G.C. Model Curriculum

प्रथम सेमेस्टर

प्रश्न पत्र क.	प्रश्न पत्र का नाम	क्रेडिट
1	Classical Sociological Tradition - I उत्कृष्ट समाजषास्त्रीय परम्पराये – I	04
2	Methodology of Social Research - I सामाजिक अनुसंधान का प्रणाली विज्ञान – I	04
3	Rural Society in India - I भारत में ग्रामीण समाज – I	04
4	Sociology of change & Development - I परिवर्तन एवं विकास का समाज षास्त्र – I	04

द्वितीय सेमेस्टर

प्रश्न पत्र क.	प्रश्न पत्र का नाम	क्रेडिट
1	Classical Sociological Tradition - II उत्कृष्ट समाजषास्त्रीय परम्पराये – II	04
2	Methodology of Social Research - II सामाजिक अनुसंधान का प्रणाली विज्ञान – II	04
3	Rural Society in India - II भारत में ग्रामीण समाज – II	04
4	Sociology of change & Development - II परिवर्तन एवं विकास का समाज षास्त्र – II	04

तृतीय सेमेस्टर

प्रश्न पत्र क.	प्रश्न पत्र का नाम	क्रेडिट
1	Criminology -I अपराध षास्त्र –I	04
2	Sociology of Kinship Marriage & Family -I नतेदारी विवाह एवं परिवार का समाजषास्त्र –I	04
3	Perspectives on India Society -I समाजषास्त्र का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य –I	04
4	Political ~~Society~~ Sociology I राजनैतिक समाजषास्त्र –I	04

चतुर्थ सेमेस्टर

प्रश्न पत्र क.	प्रश्न पत्र का नाम	क्रेडिट
1	Criminology -II अपराध षास्त्र –II	04
2	Sociology of Kinship Marriage & Family -II नतेदारी विवाह एवं परिवार का समाजषास्त्र –II	04
3	Perspectives on India Society -II समाजषास्त्र का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य –II	04
4	Political Society -II राजनैतिक समाजषास्त्र –II	04
5.	अतिरिक्त प्रश्नपत्र की ऑनलाइन होगी प्रश्नपत्र पाठ्यक्रमानुसार	06

Scanned with OKEN Scanner

प्रथम प्रश्न–पत्र

उत्कृष्ट समाजशास्त्रीय परम्परायें - I

(Classical Sociological Traditions)- I

समेस्टर प्रथम

इकाई –1

ऐतिहासिक–सामाजिक आर्थिक धरातल पर समाजशास्त्र का उद्‌भव। परम्परागत सामन्ती अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना। औद्योगिक क्रान्ति का प्रभाव और समाज तथा अर्थव्यवस्था में उत्पादन के नए रुप। उत्पादन में पूँजीवादी व्यवस्था का उद्‌भव : पूँजीवाद की प्रकृति और विशेषताएं। चिन्तन और विवेचन पर पूँजीवाद के प्रभाव का प्रकाशन।

इकाई –2

कार्लमार्क्स : मार्क्स का सामाजिक परिवर्तन का सिद्धान्त। मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद : परिवर्तन और इसके नियमों का एक दर्शनशास्त्रीय प्ररिपेक्ष्य।

इकाई –3

इतिहास की भौतिकवादी व्यख्या : विभिन्न युगों में मानव समाज के रुपान्तरण की एक व्याख्यात्मक विवेचना। आर्थिक निश्चयवाद। उत्पादन के प्रकार और समाजिक संरचना। मार्क्स का विश्लेषण : पूँजी की उत्तरोत्तर बृद्धि व केन्द्रीकरण के कारण पूँजीवाद के उद्‌भव एवं विकास तथा इसके बढ़ते दुष्परिणामों के संदर्भ में। अतिरिक्त मूल्य एवं शोषण की अवधारणा।

इकाई –4

वर्ग और वर्ग संघर्ष का उद्‌भव। सर्वहारा क्रान्ति और पूँजीवाद का भविष्य। वर्गहीन समाज पूँजीवादी समाज में अलगाव : अलगाव के उत्तरदायीकारक तथा अलगाव के कारण उत्पन्न सामाजिक विमुखता। राजनीतिक शक्ति की अवधारणा। राज्य का सामाजिक वर्गो से सम्बन्ध। सर्वहारा क्रान्ति के पश्चात् राज्य का भविष्य। विचारधारा का सिद्धान्त : विचारधारा संरचना के एक उत्कृष्ट भाग के रुप में। विचारधारा से सम्बन्धित तीन सिद्धान्त।

इकाई–5

इमाईम दुर्खीम : दुर्खीम का बौद्धिक पृष्ठभूमि। समाज की स्थिति व विघटन के प्रति उनकी चिन्ता। औद्योगिक क्रान्ति सामाजिक विद्यटन के वसीयत के रुप में। पूँजीवादी समाज में श्रम–विभाजन का बढ़ता दायरा। यान्त्रिक एवं सावयवी एकता। श्रम–विभाजन वृद्धि की व्याख्या। श्रम–विभाजन का विकृत रुप। आत्महत्या का सिद्धान्त : आत्महत्या के पूर्व सिद्धान्तों की समीक्षा। अत्महत्या दर। दुर्खीम के विशिष्ट समाजशास्त्रीय उपागम। आत्महत्या के प्रकार। समाजशास्त्र से व्यक्ति के एकीकरण की समस्या।

Scanned with OKEN Scanner

द्वितीय प्रश्न पत्र
सामाजिक अनुसंधान का प्रणाली विज्ञान - I
(Methodology Of Social Research) - I
समेस्टर प्रथम

इकाई–1

सामाजिक अनुसंधान के दर्शनशास्त्रीय आधार : ज्ञानमीमांसा के सिध्दान्त में मुद्दे, ज्ञान के स्वरूप एवं प्रकार, ज्ञान के स्रोत, ज्ञान का प्रमाणीकरण, सामाजिक विज्ञानों का दर्षन, ज्ञानोदय, तर्क एवं विज्ञान, कार्टेसियन दर्षन, वैज्ञानिक कान्ति की संरचना।

इकाई–2

प्रत्यक्षवाद एवं इसकी समीक्षा, कॉस्ट का प्रत्यक्षवाद को योगदान, दुर्खीम का प्रत्यक्षवाद को योगदान, पॉपर का प्रत्यक्षवाद को योगदान, प्रत्यक्षवाद का मूल्यांकन, भाष्यविज्ञान, आगमन विश्लेषण, नृजाति प्रणाली विज्ञान में प्रयोग, प्रघटनषास्त्रीय समाजषास्त्र अथवा प्रघटनाविज्ञान, समाजषास्त्रीय सिध्दान्त में पध्दतिषास्त्रीय परिप्रेक्ष्य।

इकाई–3

सामाजिक यथार्थता की प्रकृति व इसके उपागम (Nature of Social Reality and its Approaches) : सामाजिक यथाथीता की प्रकृति, सामाजिक यथार्थता के उपागम, प्रत्यक्षवाद, प्रघटनाविज्ञान, नृजाति प्रणाली विज्ञान : नृजाति प्रणाली विज्ञान को हसर्ल व गारफिकेल का योगदान। प्रतीकात्मक अन्तर्कियावाद, प्रतिकात्मक अन्तर्कियावाद पर प्रमुख विदानों के विचार अर्थपूर्ण। अवबोधन, समाज विज्ञान अनुसंधान में अन्वेषण का तर्क : आगमन एवं निगमन तर्क।

इकाई–4

सिध्दान्त निर्माण : तथ्य, सिध्दान्त, समाजषास्त्रीय सिध्दान्त, समाजषास्त्रीय सिध्दान्तों के प्रकार। सामाजिक अनुसंधान में वैज्ञानिक पध्दति। वस्तुनिष्ठता/मूल्य तटस्थता, उपकल्पना।

इकाई–5

परिणात्मक पद्धतियां एवं सर्वेक्षण अनुसंधान (Quantitative Mehtods and Survey Research) : परिमाणन एवं अनुमापन की मान्यताएं : सर्वेक्षण पध्दतियां, परिचालनीकरण, अनुसंधान प्ररचना : अनुसंधान प्ररचनाओं के प्रकार। निदर्षन प्ररचना : निदर्षन की पद्धतियां। प्रष्नावली निर्माण, साक्षात्कार सूची, अनुमापन एवं पैमाने, विष्वसनीयता एवं वैधता, सामाजिक सर्वेक्षण की सीमाएं।

Scanned with OKEN Scanner

तृतीय प्रश्न पत्र

भारत में ग्रामीण समाज- I

(Rural Society in India)- I

प्रथम सेमेस्टर

इकाई –प्रथम

भारत में ग्रामीण समाज, खेतिहर तथा कृषक समाज की संरचना एवं विशेषताएं, लोक संस्कृति, ग्रामीण सामाजिक स्तरीकरण।

इकाई –द्वितीय

ग्रामीण परिवार, ग्रामीण भारत में जाति, जाति पंचायत एवं प्रभुजात, ग्रामीण गुटः ग्रामीण शिक्षा एवं मनोरंजन।

इकाई –तृतीय

ग्रामीण भारत में धर्म, ग्रामीण भारत में आवास तथा अवस्थापना, भारत में कृषि अर्थव्यवस्था तथा उत्पादन प्रणाली।

इकाई –चतुर्थ

कृषक अन्तः सम्बन्ध, भू स्वामित्व एवे श्रम,

भूमि सम्बन्धी विधान तथा ग्रामीण सामाजिक संरचना।

इकाई –पंचम

ग्रामीण निर्धनता, ग्रामीणों की प्रवासिता, खेतिहर एवं भूमिहीन मजदूर, बेकारी की समस्या, जनसंख्या वृद्धि की समस्या।

अनुमोदित पुस्तकें :–

1. देशाई ए. आर. : भारतीय ग्रामीण समाज शास्त्र रूरल सोसियोलॉजी इन इण्डिया हरे कृष्ण रावत, नई दिल्ली।
2. श्रीवास एम. एन. : इण्डियाज विलयेज, विलेज इण्डिया, सोसल चेंज इन मार्डन इण्डिया ।
3. सिंह वीरेन्द्र : ग्रामीण गुटबन्दी, नीलम प्रकाषन, वाराणसी।

Scanned with OKEN Scanner

चतुर्थ प्रश्न पत्र

परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र-I

(Sociology of Change and Development)-I

सेमेस्टर प्रथम

इकाई –प्रथम

सामाजिक परिवर्तन : बर्थ, स्वरूप, दिशाएं, तथा प्रमुख अभिकरण, सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख सिद्वान्त, भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया तथा इसका भारतीय समाज पर पड़ने वाले प्रमुख प्रभाव व परिणाम, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के प्रभाव

इकाई – द्वितीय

सामाजिक विकास अवधारण :– उद् विकास, प्रगति एवं अनुकूलन की प्रकृति तथा सामाजिक विकास के कारण , कवकास के अर्द्ध विकास के सिद्धान्त

इकाई – तृतीय

आधुनिकीकरण सिद्धान्त, केन्द्र परिधि सिद्धान्त, विश्व व्यवस्थाएं, असमान विनिमय, संस्कृति तथा विकास, धारणीय विकास, विकास के परिपेक्ष्य, परिस्थिकीय, उदारवादी,मार्क्सवादी, तीसरी दुनिया के सन्दर्भ में विकास के विभिन्न पथ : पूंजीवादी पथ, समाजवादी पथ,मिश्रित अर्थव्यवस्था, गांधीवद्व पथ, मार्क्सवादी पथ।

इकाई – चतुर्थ

विकसित एवं विकासशील समाजों की अवधारणा, विकासशील समाजों की समस्याएं, सामाजिक परिवर्तन की संरचनात्मक तथा संस्थागत बाधाएं, विकास के अभिकरण : राज्य, बाजार, गैर–सरकारी संगठन, भारत के सन्दर्भ में आधुनिकीकरण, शिक्षा व्यावसायिक गतिशीलता, नगदीकरण, औद्यौगिकीकरण।

इकाई –पंचम

जनतंत्रीकरण एवे वैश्वीकरण के प्रमुख प्रभाव तथा उनसे उत्पन्न समस्याएं, पश्चिमीकरण, पंथ निरपेक्षीकरण, उपभोक्तावाद एवं विकास

अनुमोदित पुस्तकें :

1. अब्राहम, एम.एफ. 1990, मार्डन सोषियोलॉजिकल थ्योरी : ऐन इन्ट्रोडक्षन, न्यू देहली।
2. शर्मा, एस. एल. 1986, डेवलपमेंट : सोषियोकल्चर डायमेन्षन्स, जयपुर रावत।
3. हक, महबूब यू.आई 1991, रिफलेक्वन्स ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट न्यू देहली।
4. श्रीनिवास, एम.एन. 1966 सोशल चेंज इन मार्डन इन्डिया वर्कले, यूनिवर्सिटी ऑफ बर्फले।
5. मूर बिल्बर्ट ऐंड राबर्ट कुक, 1967, सोशल चेंज न्यू देहली, प्रेन्टिस हाल, इन्डिया।

Scanned with OKEN Scanner

प्रथम प्रश्न–पत्र
उत्कृष्ट समाजशास्त्रीय परम्परायें - II
(Classical Sociological Traditions) II
समेस्टर द्वितीय

इकाई –1

धर्म का सिद्धान्त : धर्म के उद्भव और उसकी भूमिका से सम्बन्धित पूर्व सिद्धान्त– धर्म की संरचना–पवित्र और अपवित्रता के साधन। पवित्र वस्तुएं मूल्यों के प्रतीक के रुप में। समाज एक सर्वशक्तिमान ईश्वर के रुप में। धार्मिक कर्मकाण्ड और उनके प्रकार, धार्मिक विश्वासों एवं कर्मकाण्डों की सामाजिक भूमिका।

इकाई –2

समाजशास्त्र को पद्धतिशास्त्र का योगदान–समाजशास्त्र विज्ञान के रुप में सामाजिक तथ्यों की अवधारणा–समाजवाद।

मैक्सबेवर : सामाजिक क्रिया का सिद्धान्त : सामाजिक क्रियाओं के प्रकार। वेबर की बौद्धिक पृष्ठभूमि। आधुनिक पूँजीवाद का विश्लेषण। प्रोटेस्टैण्ट धर्म और पूँजीवाद केक उद्भव के सम्बन्धों के सन्दर्भ में सामाजिक परिवर्तन में विचारों और मूल्यों की भूमिका पर वेबर की विचारधारा।

इकाई –3

सत्ता का सिद्धान्त : सत्ता और शक्ति –सत्ता के प्रकार और उनके वैध आधार – उनकी प्रमुख विशेषताएं, प्रशासन की विधियां और उत्तराधिकार के स्वरुप। नौकरशाही के सिद्धान्त। पूँजीवाद और बढ़ता तर्कवाद और आधुनिक नौकरशाही का उद्भव, वेबर की माडल नौकरशाही। राजनीतिक नेताओं और नौकरशाही के बीच सम्बन्ध। प्रस्थिति, वर्ग और शक्ति की अवधारणा।

इकाई –4

समाज विज्ञान को पद्धतिशास्त्र एक व्यख्यात्मक विज्ञान के रुप में। वर्स्ट (बोध) की अवधारणा और उनके आदर्श प्रकार।

विलफ्रेडो परेटो : परेटो की बौद्धिक पृष्ठभूमि। पद्धतिशास्त्र को योगदान – परेटोक का तर्कशास्त्र – प्रयोगिक पद्धति। तर्कसंगत और अतर्कसंगत क्रियाओं का वर्गीकरण।

इकाई –5

परेटो के विशिष्ट चालक और भ्रान्त तर्क के सिद्धान्त के संदर्भ में अतर्कसंगत क्रियाओं का स्पष्टीकरण। विशिष्ट चालकों और भ्रान्त तर्को का वर्गीकरण। सामाजिक परिवर्तन का सिद्धान्त–अभिजात वर्ग और जन समुदाय। अभिजनों के प्रकार, उनका वर्गीकरण, अभिजनों का परिभ्रमण।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. वेकर एण्ड बास्काफ : मार्डन सोशियोलॉजीकल थियरीज इन कन्टीन्यूटी एण्ड चेंज
2. ग्रास : सिम्पोजियम ऑन सोशियोलॉजिकल थ्योरी। 3. परसन्स : स्ट्रक्चर ऑफ सोशल एक्सन।
4. मर्टन : सोशल थियरीज एण्ड सोशल स्ट्रक्चर। 5. सोरोकिन : सोशल एण्ड कल्चरल डायनेमिक्स।
6. मेनहाइम : आइडियालॉजी एण्ड यूरोपिया 7. सोरोकिन : सोशियोलॉजिकल थियरीज ऐक्शन अप्रोच।
8. रमेश नन्दन द्विवेदी : उच्चतर समाज शास्त्रीय सिद्धान्त। 9. त्रिवेदी एवं दोषी : उच्चतर समाज शास्त्रीय सिद्धान्त।
10. हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव : आधुनिक समाज वैज्ञानिक सिद्धान्त परिचय। 11. सैनी आर.एल.एवं गुप्ता मिथलेश : समकालीन समाजशास्त्रीय सिद्धान्त। 12. एस.एल.दोषी : आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धान्त। 13. आर.एन. मुखर्जी : उत्कृष्ट समाज शास्त्रीय परम्परायें।

Scanned with OKEN Scanner

(9)

द्वितीय प्रश्न पत्र
सामाजिक अनुसंधान का प्रणाली विज्ञान - II
(Methodology Of Social Research) - II
समेस्टर द्वितीय

इकाई –1

सामाजिक अनुसंधान में सांख्यकीय (Statics in Social Research) : केन्द्रीय प्रवृति की मापें : माध्य। केन्द्रीय प्रवृति के माप : माध्यका। केन्द्रीय प्रवृति के माप : भूयिष्यका । अपकिरण की माप : माध्य विचलन । मानक या प्रमाप विचलन, चतुर्थक विचलन, सहसम्बन्ध विश्लेषण, सार्थकता परीक्षण, विचरण एवं सहविचरण, प्रतिगमन विश्लेषण।

इकाई–2

गुणात्मक अनुसंधान की प्रविधियां (Quantitative Research Techniques) : गुणात्मक अनुसंधान : अर्थ प्रविधियां एवं पद्धतियां । गुणात्मक पद्धति के रूप में सहभागी अवलोकन। नृजाति–वर्णन। साक्षात्कार निर्देषिका : एक अच्छे अन्वेषक अथवा साक्षात्कारकर्ता के गुण ।

इकाई–3

वैयक्तिक अध्ययन, विश्लेषण, मौखिक इतिहास, वृत्तांत एवं जीवन इतिहास, वंशावली, गुणात्मक अनुसंधान में पद्धतिशास्त्रीय दुविधा एवं मुद्दे, क्षेत्र कार्य में सिध्दान्त एवं अनुभव, गुणात्मक सामग्री ग्रंथाकार एवं संसाधन, गुणात्मक अनुसंधान में वैधता एवं विश्वसनीयकता।

इकाई–4

वृहत्–आकड़े एवं दितीयक स्रोतों की पद्धतियां एवं उपयोगिता (Method and Uses of Macro & Stastistic and Secondary Sources) : दितीयक स्रोत पद्धतियां एवं उपयोग वृहत्–आकड़ों के रूप में जनगणना। त्रिभुजन : गुणात्मक एवं परिमाणत्मक, पद्धतिषास्त्रों का मिश्रण। सामाजिक अनुसंधान, किया अनुसंधान एवं सहभागी अनुसंधान।

इकाई–5

सामाजिक अनुसंधान में एस.पी.एस.एस का ही प्रयोग क्यों ? सामाजिक अनुसंधान में नैतिक मुद्दे।

References : Beteille A., and T.N. Madan. 1975. Encounter and Experience : Personal Accounts of Fieldwork, New Delhi : Vikas Publishing House Pvt. Ltd. Hayeraband, Paul, 1975. Against Method : Outline of Anarchistic Theory of knowledge. London: Humanities Press. Hawthorne Geoffrey, 1976. Enlightment and Despair. A History of Sociology. Cambridge : Cambridge University. Kuhn, T.S. 1970. The Structure of Scienctific Revolutions. London : The University of Chicago press. Mukherjee, p.n. (eds) 2000. Methodology in Social Research : Dilemmas and Perspectives New Delhi : Sage (Introduction) Popper K. 1999. The logic of Scientific Discovery. London : Routledge. Shipman, Martin. 1988. The Limitations of Social Research, London : longman. Sjoberg, Gideon and Roger Nett. 1997. Methodology for Social Research, Jaipur : Raw Smelser, Neil J. Comparative Methods in Social Science.

Scanned with OKEN Scanner

तृतीय प्रश्न पत्र

भारत में ग्रामीण समाज - II

(Rural Society in India) - II

द्वितीय सेमेस्टर

इकाई –प्रथम

ग्रामीण समाज के लिए नियोजित परिवर्तन, पंचायती राज व्यवस्था एवं स्थानीय स्वशासी सरकार, पंचायती राज व्यवस्था का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव।

इकाई –द्वितीय

ग्रामीण तथा नगरीय समुदाय, सामाजिक विकाय कार्यक्रम तथा ग्रामीण विकास की रणनीतियां, गामीण सामाजिक परिवर्तन के अवरोध।

इकाई –तृतीय

भारत में प्रमुख कृषक आंदोलन एवं आलोचानात्मक विश्लेषण, ग्रामीण शक्ति संरचना तथा नेतृत्व, अर्न्तजातीय सम्बन्ध एवं जनजातीय व्यवस्था।

इकाई –चतुर्थ

वैश्वीकरण और इसका भारतीय कृषि पर प्रभाव, जल तथा सिंचाई प्रबन्ध।

इकाई –पंचम

भारत में ग्रामीण पुर्ननिर्माण– भूमि सुधार, सर्वोदय, ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, ग्रामों में संस्कृतिकरण, पश्मीकरण एवं आधुनिकीकरण।

अनुमोदित पुस्तकें

1. **चौहान ब्रजराज** : ग्रामीण समाजषास्त्र भारतीय ग्रामीण सामाजिक
2. **दुबे श्यामाचरण** : भारत के परिवर्तित संस्थान ग्राम, भारतीय ग्राम इत्यादि
3. **गुप्ता एवं शर्मा** : ग्रामीण समाजषास्त्र साहित्य भवन, आगरा
4. **डॉ. अमित अग्रवाल** : भारत में ग्रामीण समाज विवके प्रकाशन, दिल्ली।

द्वितीय सेमेस्टर
चतुर्थ प्रश्न–पत्र
परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र II
इकाई–प्रथम

प्रगति–प्रगति का अर्थ एवं परिभाषा,सामाजिक प्रगति की प्रमख विशेषतॉए सामाजिक प्रगति की सहायक परिस्थितियॉं,उदविकास एवं प्रगति में अन्तर, क्या प्रत्तेक परिवर्तन प्रगति है।

इकाई–2

सामाजिक संरचना में परिवर्तन

सामाजिक संरचना की परिभाषा,सामाजिक संरचना परिवर्तन,दार्शनिक एवं धार्मनिक पहलुओं मे अन्तार, परिवार व नातेदारी व नातेदारी जैसी सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन,सामाजिक,आर्थिक एवं औद्योगिक संगठन में परिवर्तन,शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन,जाति संरचना में परिवर्तन

इकाई–3

सामाजिक परिवर्तन के सिद्वांत

सामाजिक परिवर्तन का रेखीय सिद्वांत,सामाजिक परिवर्तन का चक्रिय सिद्वांत सामाजिक परिवर्तन का उतार,चढाव का सिद्वांत ,सौरोकिन के सिद्वांत की आलोचना ।

इकाई –4

मानवीय विकास के आर्थिक पहलू

आर्थिक विकास का सूचकांक,आर्थिक विकास का प्रभाव,मानव शक्ति का प्रभाव,मानव शक्ति की वर्तमान स्थिति,आर्थिक विकास में तीव्रता लाने के लिए उपाय,आर्थिक विकास बनाम मानवीय विकास।

इकाई–5

सामाजिक विकास

सामाजिक विकास का अर्थ एवं परिभाषा, सामाजिक विकास की विशेषताऍ ,सामाजिक विकास के आयाम,सामाजिक विकास के सूचक,दीर्घकालीन पोषणीय विकास

अनुमोदित पुस्तकें

1.हैरिसन,डी. 1989, द सोशियोलॉजी ऑफ मार्डन इन्डिया वर्कले,यूनिवर्सिटी ऑफ बॅफले

2.अम्णदुराई, अर्जन,1997 माडर्निटी एट लार्ज, कल्चरल डाइमेंन्शन्स ऑफ ग्लोबलाइजेशन,न्यू देहली।

3.गिडिन्स एंथली, 1990 दी कॉसीक्वेंसेस आफ माडर्निटी कैम्ब्रिज, पॉलिटी प्रेस।

4वर्ल्ड बैंक, 1995 वर्ल्ड डेवलपमेन्ट रिपोर्ट,न्यूयार्क।

5.मिश्र के, के. विकास का समाजशास्त्र

Scanned with OKEN Scanner

~~द्वितीय वर्ष~~ (समेस्टर तृतीय)

प्रथम प्रश्न–पत्र

अपराधशास्त्र (criminology) I

इकाई–1

अपराध के अवधारणात्मक उपागम : उपागम का अर्थ एवं परिभाषा, अपराध की अवधारणा, अपराध का अर्थ एवं परिभाषा, अपराध के सामान्य तत्व सामाजिक विचलन, सामजिक विचलन की अवधारणा, विचलन की प्रमुख विशेषताएं, विचलित व्यवहार का समाजशास्त्र, अपराधों का वर्गीकरण या प्रकार आर्थिक अपराध, आर्थिक अपराध का अर्थ, आर्थिक अपराधों के प्रमुख स्वरुप

इकाई–2

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर आर्थिक अपराधों का प्रभाव, भारत में आर्थिक अपराध, हिंसात्मक अपराध, हिंसात्मक अपराध का अर्थ, हिंसात्मक अपराधों के प्रमुख स्वरुप, हिंसात्मक अपराधों के प्रमुख प्रतिमान, श्वेतवसन अपराध की अवधारणा, श्वेतवसन अपराध के प्रमुख लक्षण, श्वेतवसन अपराध के सामान्य स्वरुप, श्वेतवसन अपराध के कारण, श्वेतवसन अपराध के परिणाम।

इकाई–3

अपराध कारणत्व सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य : अपराध के सामान्य कारण या कारक, भारत में अपराध के कारण, अपराध के सिन्द्धात या सम्प्रदाय, प्रेतशास्त्रीय सिद्धान्त या सम्प्रदाय, समाजवादी सिद्धान्त या सम्प्रदाय, प्रारुपवादी सिद्धान्त या सम्प्रदाय, मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त या सम्प्रदाय, समाजशास्त्रीय सिद्धान्त या सम्प्रदाय, आधुनिक सैद्धान्तिक प्रस्तावनाएं।

इकाई–4

अपराधी व्यक्तित्व, अपराध का चिन्हित (लेबलिंग) सिद्धान्त, अपराध एवं अपराधियों का परिवर्तशील पार्श्वचित्र : पेशेवर अपराध एवं संगठित अपराध, पेशेवर अपराधी का अर्थ, संगठित अपराधी के लक्षण, संगठित अपराध का अर्थ, संगठित अपराधियों के लक्षण, पेशेवर एवं संगठित अपराध में अन्तर, सामान्य एवं पेशेवर अपराधी में अन्तर, समकालीन भारत में अपराधियों का परिवर्तनशील सामाजिक–आर्थिक पार्श्वचित्र।

इकाई–5

नारियों एवं बच्चों के प्रति अपराध : नारियों के अपराध, नारियों के प्रति होने वाले अपराधों की प्रकृति, बच्चों के प्रति अपराध, बच्चों के प्रति अपराध के प्रमुख स्वरुप, बच्चों के प्रति अपराध : साइबर अपराध का अर्थ, साइबर अपराधों के प्रमुख प्रकार, भारत में साइबर, अपराधों की रोकथाम हेतु अपनाए गये उपाय।

Scanned with OKEN Scanner

द्वितीय-प्रश्नपत्र

द्वितीय वर्ष (समेस्टर तृतीय)

नातेदारी, विवाह एवं परिवार का समाजशास्त्र-I

(Sociology of Kinship Marriage & Family)-I

इकाई –1

1. विषय की प्रकृति एवं महत्व।
2. मौलिक शब्द एवं संप्रत्यक्ष : वंश, गौत्र मातृत्व, अधांश, नातेदारी, लगोत्रता, अगम्य पीढ़ी, अनुवांशिकता, उत्तराधिकारी, समरम्तता एवं विवाहजन्य सम्बन्ध।

इकाई –2

3. अध्ययन के अधिगम : ऐतिहासिक एवं उद्विकासीय अभिगम।
    1. संरचनावादी–प्रकार्यवादी अभिगम।
    2. संरचनावादी अभिगम
    2. संस्कृतिवादी अभिगम
    4. लैंगिकवादी परिप्रेक्ष्य

इकाई –3

नातेदारी शब्दावली : नातेदारी एवं संगठनात्मक सिद्धान्त के रुप में उत्तराधिकारी का नियम– पित्सतात्मक, मातृसतात्मक, दुहरा एवं समस्त्रोतीय पीढ़ी सम्पूरक प्रशासन।

इकाई –4

उत्तराधिकारी समूह : निगमित समूह एवं स्थानीय समूह।

इकाई –5

परिवार एवं वैवाहिक सम्बन्ध : मैत्रीपूर्ण विवाह सिद्धान्त–सममित एवं असमित विनियम विवाह सिद्धान्त।

(क) निर्देशात्मक एवं अभिमानक विवाह।

(ख) एक विवाह प्रथा तथा बहुविवाह प्रथा।

(ग) वैवाहिक कार्य सम्पादन।

Scanned with OKEN Scanner

Mahatma Gandhi chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya

Chitrakoot Satna (M.P.)

17

14

तृतीय सेमेस्टर

तृतीय प्रश्न पत्र

समाजशास्त्र का सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य– I

(Perspectives of Sociology)- I

इकाई– प्रथम

समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

समाजशास्त्र सिद्धान्तों की प्रकृति समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों में आधुनिक प्रवृत्तियाँ।

इकाई– द्वितीय

सिद्धान्तीकरण के स्तर सिद्धान्त और शोध में अंतःसम्बन्ध। संरचनात्मक प्रकार्यवाद– रैडक्कफ ब्राउन का प्रकार्यवाद।

इकाई– तृतीय

पारसस का संरचनात्मक– प्रकार्यातम दृष्टिकोण। जे.फ्री अलेक्जेएडर का नव प्रकार्यवाद।

इकाई– चतुर्थ

संरचनावाद एवं उत्तर संरचनावाद– मानव प्रकृति एवं सांस्कृतिक भिन्नता–सी.सेवी स्ट्रॉस उत्तर संरचनात्मक की विशेषतायें।

इकाई– पंचम

संघर्ष के सिद्धान्त– संघर्ष का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप तथा कारण । मार्क्स का वर्ग संघर्ष।

अनुमोदित पुस्तके

1. देसाई, नीरा एण्ड एम. कृष्णराज, 1987 वूमेन एण्ड सोसायटी इन इण्डिया, देलही : अजन्ता।

2. फोर्ब्स, जी. 1998, वूमेन इन मार्डन इण्डिया, न्यू देलही, कॅम्ब्रीज यूनिवर्सिटी प्रेस।

3. ओकले ऐन. 1972, सेक्स, जेन्डर एण्ड सोसायटी, न्यूयार्क : हार्पर एण्ड रो

4. मेकर्स क्रिसटन एण्डरसन एट ऑल (ई.डी. एस.) 1998 फेमिनिस्ट फाउन्डेसन्स : टूवडस ट्रान्सफॉर्मिंग, न्यू देलही, सेज

Scanned with OKEN Scanner

(15)

~~द्वितीय वर्ष~~ (समेस्टर तृतीय)

चतुर्थ ~~प्रश्न~~ प्रश्न–पत्र

राजनैतिक समाजशास्त्र

(Political Sociology) I

इकाई –1

राजनैतिक समाजशास्त्र की परिभाषा तथा विषय–सामग्री, राजनैतिक समाजशास्त्र के विषिष्ट उपागम। राजनैतिक व्यवस्था तथा समाज के बीच अंतःसम्बंध।

इकाई –2

प्रजातांत्रिक तथा सर्वाधिकारवादी व्यवस्थाएं, प्रजातांत्रिक तथा सर्वाधिकावादी व्यवस्था के आविर्भाव तथा स्थायित्व की सहायक सामाजिक–आर्थिक दशाएं।

इकाई –3

राजनैतिक संस्कृति–अर्थ तथा विशेषताएं । राजनैतिक सामाजीकुरण–अर्थ, विषेषताएं तथा अभिकरण।

इकाई –4

समाज में शक्ति वितरण के अभिजन सिद्धान्त (पोरका, परेंटो, आर.मिचेल्स, मिल्स तथा अन्य के सन्दर्भ में) प्रबुद्धजन (बुद्धिजीवी) – राजनैतिक भूमिका तथा महत्व दबाव समूह तथा हित समूह–प्रकृति, आधार तथा राजनैतिक महत्व।

इकाई –5

नौकरशाही– विशेषताएं तथा प्रकार, नौकरशाही का राजनैतिक विकास में महत्व (भारत के विशेष सन्दर्भ में) राजनैतिक दलों की विशेषताएं, राजनैतिक दलों की सामाजिक संरचना।

Scanned with OKEN Scanner

द्वितीय वर्ष (समेस्टर चतुर्थ)

प्रथम प्रश्न–पत्र

अपराधशास्त्र (criminology) II

इकाई –1

भ्रष्टाचार : भ्रष्टाचार का अर्थ एवं परिभाषाएं, भ्रष्टाचार का समाजशास्त्र, भ्रष्टाचार का मनोविज्ञान, भारत में लोक जीवन में भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार के प्रमुख स्वरुप, भ्रष्टाचार के प्रमुख क्षेत्र, भ्रष्टाचार के प्रमुख परिणाम, भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपनाए गए उपाय, भ्रष्टाचार के निरोध के लिए सुझाव।

इकाई –2

दण्ड के सिद्धान्त : दण्ड की अवधारणा, दण्ड के प्रमुख तत्व, दण्ड के प्रमुख उद्देश्य, दण्ड की व्यर्थता एवं कीमत, दण्ड के प्रमुख सिद्धान्त।

सुधार एवं इसके स्वरुप : सुधार का अर्थ, दण्ड के प्रमुख उद्देश्य, भारत में सुधारात्मक संस्थाएं, सुधार के स्वरुप, बन्दीगृह आधारित सुधार, सामुदायिक आधारित सुधार, अपराध निरोध एवं सुधार, भारत में अपराध निरोध के प्रमुख उपाय।

इकाई –3

बन्दीगृहों में सुधार कार्यक्रम : बन्दीगृह का अर्थ एवं परिभाषाएं बन्दीगृह के प्रमुख उद्देश्य बन्दीगृह, बन्दीगृहों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भारत में दण्ड एवं बन्दीगृह सुधार, राष्ट्रीय बन्दीगृह नीति, बन्दियों का वैज्ञानिक वर्गीकरण, बन्दीगृह उद्योग का आधुनिकीकरण एवं निजी क्षेत्र भागीदारिता, सुधार कार्यक्रम, सुधार का नई दिल्ली मॉडल।

सुधार प्रशासन की समस्याएं : सुधार प्रशासन की प्रमुख समस्याएं, मानवाधिकार एवं बन्दीगृह प्रबन्धन, सुधर की सीमाएं एवं सम्भावनाएं।

इकाई –4

बन्दीगृह के विकल्प : परीवीक्षा, कारावकाश, खुले बन्दीगृह तथा उत्तर–रक्षा कार्यक्रम परिवीक्षा, परिवीक्षा का अर्थ एवं परिभाषाएं, परिवीक्षा का ऐतिहासिक विकास, भारत में परिवीक्षा, परिवीक्षा केक प्रमुख उद्देश्य या लक्ष्य, परिवीक्षा की प्रमुख शर्ते या दशाएं, परिवीक्षा अधिकारी की योग्यताएं, परिवीक्षा के प्रमुख की प्रमुख हानियां, कारावकाश, कारावकाश, का अर्थ एवं परिभाषाएं, कारावकाश के लिए प्रमुख शर्ते या दशांए, कारावकाश की प्रमुख हानियां, कारावकाश एवं परिवीक्षा में अन्तर।

इकाई –5

खुले बन्दीगृह, खुले बन्दीगृह का अर्थ एवं परिभाषाएं, खुले बन्दीगृहों की एतिहासिक पृष्ठिभूमि, खुले बन्दीगृहों की प्रमुख विशेषताएं, खुले बन्दीगृहों के आधारभूत नियम, भारत में खुले बन्दीगृह, उत्तर–रक्षा कार्यक्रम, उत्तर–रक्षा कार्यक्रम।

Scanned with OKEN Scanner

शास्त्रीय परिपेक्ष्य : पीड़ितशास्त्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पीड़ितशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषाएं, ड़ितों का वर्गीकरण, अपराध में पीड़ित की भूमिका, अपराध के पीड़ितों को मुवावजे पर ोद–विवाद।

अनुमोदित पुस्तकें :

1. Sutherland : Principles of Criminology
2. Taft : Criminology
3. Vold : Theoretical Criminology
4. Clinard : Sociology of Deviant Behaviour
5. Devendra Chandra : Open Air Prisons
6. P.Varma : Crime Criminal And Convict.
7. Tappan : Juvenile Delinguency.
8. Sen : Penology Old and New.
9. Mannhiem : Criminal Justice and Social Reconstruction.
10. Haikerwal : A Comparative Study of Penology.
11. सुशील चन्द : सोशियोलॉजी ऑफ डेवि ऐवना इन इण्डिया।
12. श्यामधर सिहं : अपराध शास्त्र के सिद्धान्त।
13. धर्मवीर महाजन एवं कमला महाजन : अपराधशास्त्र।

Scanned with OKEN Scanner

(10) (18)

चतुर्थ सेमेस्टर
द्वितीय चतुर्थ प्रश्न–पत्र
नातेदारी,विवाह एवं परिवार का सामाजशास्त्र - The Sociology of Kinship, Marriage & Fam II

शावली विधि

इकाई–1

वंशानुकम,वंशानुकम का वर्गीकरण,पितृवंशी एवं मातृवंशी वंशानुकम,दोहरे एवं उभयवर्ती वंशानुकम ,सम्पूरक वंशागत सम्बन्ध

इकाई–2

परिवार

परिवार के प्रकार,परिवार तथा गृहस्थी,प्राथमिक एवं विस्तारित परिवार,विकासीय चक,परिवार के प्रमुख कार्य ,परिवार में आधुनिक परिवर्तन,परिवार का भविष्य

भारत में परिवार एवं विवाह क्षेत्रीय विभिन्नताएँ परिवर्तन की शक्तियों बालकों एवं बृद्वजनों के देखभाल के संदर्भ में परिवार,हिन्दू विवाह,हिन्दू विवाह की प्रमुख विशेषताएँ,हिन्दू विवाह के प्रमुख उददेश्य,हिन्दू विवाह में परिवर्तन

इकाई–3

निवास के नियम

निवास की अवधारणा,निवासो का वर्गीकरण,पितृस्थानी–,मातृस्थानीय निवास,पति स्थानीय एवं पत्नी स्थानीय निवास,नव स्थानीय एवं जन्म स्थानीय निवास

इकाई – 4

भारत में परिवार

संयुक्त परिवार अर्थ एवं विशेषताएँ संयुक्त परिवार के प्रकार,संयुक्त परिवार की संरचना,संयुक्त परिवार में आधुनिक परिवर्तन,संयुक्त एवं एकांकी परिवार में अन्तर,भारत में ग्रामीण परिवार,भारत में नगरीय परिवार

इकाई–5

परिवार एवं विवाह के जनांककीय पहलू

भारतीय समाज का जनसंख्यात्मक पार्श्वचित्र भारत में परिवार एवं विवाह के जनांककीय पहलू भारत में प्रवासी मजदूर मजदूरों के प्रमुख लक्षण,भारत में प्रवासी मजदूरो की प्रमुख समस्याएँ एवं उनका समाधान

अनुमोदित पुस्तकें

1बर्नेस जे.एम. 1971 थ्री स्टाइल्स इन द स्टडी ऑफ फिनशिप, लंदन टेविसटॉक।.
2 फोर्टस, एम. 1970 लाइफ एण्ड सोशल स्ट्रचर एण्ड अदर एसेन, लंदन, एथ्लोन प्रेस।
3गुडे जैक,1971 फिनशिप हारमोन्डस वर्थः पेंनगुयिन बुक्स लिमिटेड।
4लेविस स्ट्रॉस, क्लाउड.1969 (1999) एलिमिन्ट्री स्ट्रक्चर ऑफ फिनशिप,लंदन एयरे एण्ड स्पोटिक बुक्स।

Scanned with OKEN Scanner

ahatma Gandhi chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya

Chitrakoot Satna (M.P.)

चतुर्थ सेमेस्टर

तृतीय प्रश्न पत्र

समाजशास्त्र का सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य– II

(Perspectives of Sociology)- II

इकाई– प्रथम

रेन्डाल कोलिन्स : संधर्ष का सामाजिक परिवर्तन। कोजर का सिद्धान्त–संघर्ष का प्रकार्यवाद्।

इकाई– द्वितीय

आलोचनात्मक सिद्धान्त एवं मार्क्सवाद– फैन्फ़कुर्त स्कूल, जुर्गेन हैबरमास के प्रमुख विचार, ए.ग्राम्सी– " अधिपत्य या प्राधान्य"।

इकाई– तृतीय

अंत क्रियावादी दृष्टिकोंण – प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद। जार्ज हरबर्ट मीड– का प्रतीकात्मक अन्तः क्रियावाद।

इकाई– चतुर्थ

हरबर्ट ब्लूमर का प्रतीकात्मक अन्तः क्रियावाद।

इकाई– पंचम

समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों में आधुनिक प्रवृत्तियाँ – एन्थेनी गिडेन्स– संरचनाकरण सिंद्धान्त।

अनुमोदित पुस्तके

1. कॉड्रो, नैन्सी, 1978 द रिप्रोडक्शन ऑन मदरिंग, बर्कले, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस

2. मैकोबी, एनलर एण्ड कैराल जैकलीन, 1975 द साइकोलॉजी ऑफ सेक्स डिफरेन्सेज स्टेनफोर्ड, यूनिवर्सिटी प्रोस।

3. दूब, लीलएट आल, (इ.डी.एस.) 1986 विजिलिटी एण्ड पावरख एसेज ऑव वूमेन इन सोसायटी एण्ड उेवलपमेन्द, न्यू देनही : ओ.यू.पी.

4. मैकफॉरमैक, सी एण्ड एम . स्ट्राथर्न (एड़) 1980 नेचर कल्चर एण्ड कैम्ब्रीज : कैम्ब्रीज यूनिवर्सिटी प्रेस

चतुर्थ प्रश्नपत्र

सेमेस्टर–चतुर्थ

राजानैतिक समाजशास्त्र (Political Sociology) II

इकाई–1

राजनैतिक भर्तीकरण,जनसहभागिता,राजनैतिक उदासीनता,कारण तथा परिणाम(भारत के विशेष संदर्भ मे)

इकाई 2

भारत मेंराजनैतिक प्रकियाएँ,भारतीय राजनीति मे जाति,धर्म,क्षेत्रीयता तथा भाषा की भूमिका

इकाई–3

जनमत में जनसम्पर्क माध्यम –जनसंचार की भूमिका,अशिक्षित सामाजों में संचार की समस्यायें(पार्टी और राजनैतिक के संदर्भ में)सामाजिक जीवन का राजनीतिकरण

इकाई–4

ग्रामीण भारत में नेतृत्व तथा गुट –नेतृत्व की परिभाषा,विशेषताएँ,लक्षण तथा वर्गीकरण,ग्रामीण नेतृत्व के आधार तथा बदलते प्रतिमान,ग्रामीण गुट।

इकाई–5

राजनैतिक दल –अर्थ,राजनैतिक दलों के निर्माणिक तत्व एवं सामाजिक संगठन,राजनैतिक दलों की उत्पत्ति एवं प्रकार्य एवं वर्गीकरण,भारत में राजनैतिक दलों का विकास,भारत में राजनैतिक दलों का वर्गीकरण एवं विशेषताएँ

अनुमोदित पुस्तके–

1.रवीन्द्रनाथ मुखर्जीः भारत में सामाजिक कल्याण तथा सुरक्षा

2.भारत सरकार :पंचवर्षीय योजनाएँ

3.दुबे लीला एण्ड आल(ई.डी.एस) 1986 विजिविलिटी एण्ड पावर,एसेज ऑन वूमेन इन सोसाइटी एण्ड डवलपमेंट न्यू दिल्ली

4.मैककॉमेंक सी एण्ड एम.स्ट्राथर्न (एड) 1980 नेचन कल्चर एण्ड जेन्डर कैम्ब्रीजःकैम्बरीज यूर्नीवसिटी